ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-3*April- 2018
Innovation The Research Concept

औरंगजेब कालीन राजनीति में छत्रसाल बुन्देला के प्रभावों का मूल्यांकन

हरीश कुमार
पद——— लिखें
इतिहास विभाग,
महाराज विनायक ग्लोबल यूनीवर्सिटी,
जयपुर, राजस्थान

सारांश

चम्पतराय की दुखात्मक मृत्यु के साथ ही मुगल साम्राज्य के विरूद्ध बुन्देलो के एक पक्ष का अन्त हो गया। लेकिन उसके पुत्र छत्रसाल बुन्देला के द्वारा पुनः काफी लम्बे समय तक न केवल मुगलों के विरूद्ध संघर्ष जारी रहा बल्कि सम्भवतः उत्तरकालीन मुगल सम्राटों के विरूद्ध भी जारी रहा।[1]छत्रसाल चम्पतराय का चौथा पुत्र था, जिसका जन्म मई सन् 1649 ई0 में हुआ था। छत्रसाल की प्रवृत्ति एक सामान्य बुन्देला की भांति ही थी। उसने अपना जीवन एक तीर कमान से शुरू किया लेकिन शीघ्र ही वह एक बड़ी सेना के साथ बड़े क्षेत्र का रक्षक बन गया। उसने शिवाजी को अपना राजनैतिक एवं सैनिक गुरू माना, जो उसके शैक्षिक कार्यों हेतु सहायक हुये थे।[2]छत्रसाल प्रारम्भ से ही धार्मिक प्रवृत्ति का था।[3]स्हारा के विरूद्ध संघर्ष में छत्रसाल अपने पिता के साथ था लेकिन शीघ्र ही वह मोरानगांव आ गया और यहीं पर अपने माता पिता की मृत्यु का समाचार सुना। वह अपने भाई अंगद से देवगढ़ में मिला, दोनों भाई दुखी थे और प्रतिशोध लेने हेतु तत्पर थे।

मुख्य शब्द : मुख्य शब्द लिखें

प्रस्तावना

तत्कालीन बुन्देलखण्ड की परिस्थितियों का अवलोकन करने से यह स्पष्ट होता है कि छत्रसाल और उसका भाई अंगद बुन्देलखण्ड प्रदेश से किसी के सहयोग की अपेक्षा नही रख सकते थे। मुगल सम्राटों के विरूद्ध बुन्देलों का सैन्य विद्रोह जुझार सिंह, पृथ्वीराज और चम्पतराय के समय की भाँति ही स्वतंत्र और अलग ढंग का था, जिसमें वहाँ की जनता का सहयोग नही था। यही कारण है कि दोनों भाई छत्रसाल और अंगद ने साम्रज्यिक सेवा में शामिल होने का निश्चय कर लिया था।[4] सन् 1664–65 ई0 तक छत्रसाल व उनका भाई अंगद और चाचा जामशाह के साथ मिर्जा राजा जयसिंह के पास गये और शीघ्र ही शिवाजी के विरूद्ध कार्यवाही में भाग लिया। छत्रसाल ने पुरन्दर के आक्रमण के समय भी मुगलों का अत्यधिक सहयोग दिया इस पर छत्रसाता को उचित मनसब भी प्रदान किया गया[5]बीजापुर के आक्रमण में भी उसका सहयोग था और दिलेरखाँ के विरूद्ध भी उसने उचित कार्यवाही की लेकिन इस समय छत्रसाल को ऐसा प्रतीत हुआ कि वह मुगल साम्राज्य से अपने आपको स्वतंत्र रख सकता है इसी विचार के साथ वह गुप्त रूप से शिवाजी के पास गया।[6] छत्रसाल कुछ समय तक शिवाजी के साथ पूना रहा, जहाँ पर उसने शिवाजी से सर्वप्रथम कूटनीति और सैनिक शिक्षा प्राप्त की, वह शिवाजी की सेवा में ही रहना चाहता था लेकिन शिवाजी ने उसे अपने क्षेत्र बुन्देलखण्ड जाकर वहाँ मुगलों से सुरक्षा करने तथा स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व संभालने की सलाह दी। यहाँ यह स्पष्ट दृष्टिगत होता हैं कि कैसे एक मुगल साम्राज्य का अधिकारी अपनी स्थिति थोड़ी सुदृढ़ होते देखकर शीघ्र ही अपना अलग स्वतंत्र राज्य स्थापित करने की महत्वाकांक्षाये रखने लगता था। छत्रसाल ने शिवाजी की सलाह के अनुसार कार्य किया भीमा नदी को पार किया, इस समय छत्रसाल के पास न तो समुचित साधन थे, न सहयोग था, न ही अधिक सहयोगी थे और न ही बुन्देलखण्ड की जनता साथ थी। लेकिन शीघ्र ही छत्रसाल के लिये एक चुनौती उठ खड़ी हुई, वह यह कि ग्वालियर के गवर्नर फिदाईखान ओरछा से प्रसिद्ध मंदिरों को तोड़ने के उद्देश्य से 1800 घोड़ों की एक सेना से साथ उस क्षेत्र की ओर बढ़ा। ओरछा का शासक सुजान सिंह, दक्कन में मुगल सेना में सेवारत था। बुन्देला अंगद के नेतृत्व में एकत्रित हुए और धूमघाट के निकट एक मुठभेड़ में अत्यधिक हानि के साथ फिदाईखान की पराजय हुई।[8]जब सुजान सिंह को अपनी राजधानी पर आक्रमण किये जाने का पता चला तो वह अपनी स्थिति की सुरक्षा के लिये

अत्यधिक व्याकुल हो उठा। इसी समय छत्रसाल का बुन्देलखण्ड लौटना तथा उस क्षेत्र में मुगलों के विरूद्ध अस्तव्यस्तता फैलाने की उसकी इच्छा का भी पता चला। अतः सुजानसिंह की चिन्ता द्विगणित हो गइ, कारण कि छत्रसाल के पिता चंतपराय के विरूद्ध उसने मुगलों की भरपूर सहायता की थी, अतः अब सुजान सिंह को छत्रसाल को सांत्वना देने के उद्देश्य से उसने शीघ्र ही एक दूत उसके पास भेजा, छत्रसाल ने दूत का उचित स्वागत किया। दोनों परिवारों ने अपने पूर्व की कलह को भूला देने का वादा किया और सुजान सिंह ने अपनी मातृभूमि पर छत्रसाल की ज्यादा से ज्यादा सहायता करने का वचन दिया। सुजान सिंह के सहयोग का आश्वासन प्राप्त करने के उपरान्त छत्रसाल ने अपने चचेरे भाई बलदाऊ से मुलाकात की और अपनी योजनाओं के बारे में बताया। बलदाऊ पहले तो हिचकिचाया लेकिन जब उसे छत्रसाल की साहसिक कार्यवाहियों के बारे में पता चला तो वह शीघ्र ही उसका साथ देने हेतु तैयार हो गया। इस प्रकार सन् 1671 ई0 में छत्रसाल ने दृढ़ निश्चय के साथ मुगल शासन को अपने देश से हटाने हेतु बुन्देलों को संगठित करने के उद्देश्य से नर्मदा नदी को पार किया और बुन्देलखण्ड में प्रवेश किया।[9] इसी समय बलदाऊ बांगुडा पहुँचा, जहाँ पर छत्रसाल उससे मिला, पुनः दोनों बिजौरी[10] की ओर बढ़े, जहाँ पर उसे अपने भाई रतनशाह से सहयोग लेना था। छत्रसाल बिजौरी काफी दिनों तक रहा लेकिन उसके भाई का उचित जवाब नही मिला। छत्रसाल और बलदाऊ ओदेरा[11] की ओर बढ़े जहाँ पर बाकीखान उनसे मिला और उसने अपने सहयोग का आश्वासन दिया। अब छत्रसाल नेता के रूप में नियुक्त हुआ और लूट के माल में उसका हिस्सा 55 प्रतिशत रखा गया, जबकि शेष भाग बलदाऊ को मिलना था।[12] अब तक छत्रसाल के पास एक अच्छी सेना नहीं थीउसकी सेना में केवल तीस घोड़े तथा तीन सौ पैदल सैनिक ही थे। लेकिन फिदाईखान के ओरछा के मंदिरों पर आक्रमण ने औरंगजेब की मंदिर ध्वस्त करने की नीति को प्रमाणित किया और उसने स्थानीय जनता की भावनाओं को उग्र किया तथा वे सभी हिन्दू धर्म के नेता तथा बुन्देला स्वतंत्रता के रक्षक छत्रसाल के सहयोगी हो गये। वे चंपतराय के साथ हुये व्यवहार को भूले नही थे तथा इस्लामिक सेना से अपनी रक्षा करना चाहते थे, परिणामस्वरूप छत्रसाल ने अपनी मातृभूमि के प्रत्येक वर्ग के लोगों का उत्साहपूर्ण सहयोग प्राप्त किया। प्रमुख अमीर और जागीरदारों का भी उसे सहयोग मिला, अतः अब छत्रसाल अपने क्षेत्र में मुगल शासन का विरोध करने हेतु एक अच्छे संगठन के साथ तैयार था।

उद्देश्य

1. बुन्देला विद्रोह के अवलोकन से यह भी सिद्ध हो जाता है कि यदि बुन्देलखण्ड के महत्वपूर्ण सरदारों की सूची तैयार की जाये तो मुगल सेवा में कार्यरत सरदारों की संख्या विद्रोही सरदारों से अधिक जान पड़ती है। प्रो0 एस. अतहर अली ने 1000 से ऊपर के मनसबों की जो विस्तृत सूची दी है उसमें अनेक बुन्देला सरदारों का भी उल्लेख है जिससे यह स्पष्ट होता है कि अनेक बुन्देला सरदार न केवल उच्च मनसबों पर ही आरूढ़ थे वरन् साम्राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में भी वह महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्त थे, वे सम्राट विश्वास–पात्र थे। विद्रोही बुन्देलों की एक मुख्य विशेषता यह थी कि साम्राज्यिक सेना के दबाव बढ़ने पर वे नतमस्तक होकर मुगल सेना में भर्ती हो जाते थे तथा दक्षिण व अन्य क्षेत्रों से वापिस आकर के बिरूद्ध मुगल वापस लौटकर विद्रोह कर दिया करते थे।
2. 17 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में छत्रसाल बुन्देला की अभूतपूर्व सफलता इसलिये सम्भव हुई क्योंकि औरंगजेब राजस्थान व दक्कन की समस्याओं में गम्भीर रूप से उलझा हुआ था। अन्ततः हम इस निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं कि एक भी विद्रोही बुन्देला सरदार समस्त बुन्देलों में एकता नहीं स्थापित कर पाया था। उन्होंने जो राज्य स्थापित किये वह अधिकाधिक एक युद्ध राज्य ही पुकारे जा सकते हैं इन्हें किसी भी प्रकार से राष्ट्र निर्माता नहीं कहा जा सकता है।
3. वे सम्पूर्ण 17 वीं शताब्दी में अव्यवस्था व लूटमार करने में संलग्न रहे।[13] इसी प्रकार बी.डी. गुप्ता लिखते हैं कि अधिकांश ऐतिहासिक वृत्तान्तों में बुन्देलों को लुटेरों व अविश्वसनीय सैनिक की संज्ञा दी गई है, जिस मत से वे सहमत नहीं हैं। सम्पूर्ण 17 वीं शताब्दी में मुगलों को बुन्देला समस्या से जूझना पड़ा जिसके फलस्वरूप अनेक सैनिक मुठभेड़ों में दोनों पक्षों को अभूतपूर्व हानि हुई। हजारों सैनिकों के साथ–साथ निर्दोष जनता का संहार हुआ। इन क्षेत्रों में अर्थ–व्यवस्था अस्त–व्यस्त हुई और अनेक वरिष्ठ मुगल सामंतगण इस क्षेत्र में फंसे रहे। बुन्देलखण्ड मुगलों हेतु एक महत्वूपर्ण क्षेत्र था क्योंकि यह उत्तर भारत से दक्षिण के मार्गों को नियन्त्रित करता था। इसलिये दक्षिण की सीमाओं पर एक विद्रोही जाति या क्षेत्र मुगल साम्राज्य के लिये विशेष रूप से हानिकारक हो सकते थे। फलस्वरूप तीनों मुगल बादशाहो–जहाँगीर, शाहजहाँ व औरंगजेब ने मित्रता, समझौता, कूटनीति व दमन का प्रयोग कर इस क्षेत्र को शान्त करने का प्रयत्न किया था। अनेक बार बुन्देला राजाओं ने मुगल मित्रता को त्याग कर विद्रोह का मार्ग ग्रहण किया था किन्तु युद्ध से थक कर जब वे क्षमा याचना करते थे तो मुगल बादशाह उन्हें सम्मानजनक पद व मनसब प्रदान कर दिया करते थे। बुन्देला विद्रोहों के गम्भीर अध्ययन से उसके स्वरूप के अनेक पहलू उभरकर हमारे समक्ष आते हैं। बुन्देला जाति स्वभाव से उदंडी व विद्रोही प्रवृत्ति की जाति थी। इनके कई महत्वकांक्षी सरदारों जैसे वीर सिंह, जुझार सिंह, चम्पतराय और छत्रसाल ने अपने परिवार के वर्चस्व को बुन्देलखण्ड की राजनीति में कायम करने हेतु निरन्तर संघर्ष किया था। छत्रसाल बुन्देला का मूल्यांकन करते हुये बी.डी. गुप्ता ने लिखा है कि उसने पूर्वी बुन्देलखण्ड में एक स्वतंत्र सुसम्पन्न राज्य की स्थापना कर ली थी व उसकी सेवा में हजारों सैनिक कार्यरत थे।

4. मुगलों के विरूद्ध अपने युद्ध में बुन्देलों ने मराठों की भांति गुरिल्ला रणनीति अपनाई थी इनके विद्रोही सरदारों ने बुंदेलखण्ड में स्थित छोटे–जमींदारों व राजा की उपाधि देने, 5000 का मनसब प्रदान करने तथा उसके पुत्रों को भी उचित मनसब प्रदान करने हेतु सम्राट से अनुरोध किया। सम्राट ने फिरोज जंग के प्रस्ताव को मान लिया और छत्रसाल को 4000 का मनसब प्रदान किया।[14] उसके पुत्र हृदय शाह एवं पदमसिंह को भी क्रमशः 1500 जात, 1000 सवार तथा 1500 सदिजात एवं 500 सवार का मनसब प्रदान किया।[15] छत्रसाल ने सम्राट औरंगजेब के पास उससे मिलने दक्कन भी गया जहाँ पर वह अपनी मृत्यु तक रूका था पुनः वह अपने देश आ गया।[16]इस प्रकार सम्राट औरंगजेब के काल में छात्रसाल बुन्देला ने लगभग पूरे समय विद्रोही रूख इख्तियार किये रखा। उसने लगभग सम्पूर्ण मध्य प्रान्त को अस्त–व्यस्त कर रखा था। और कभी भी उसने उस क्षेत्र के अमीरों एवं अधिकारियों की अधीनता नहीं मानी बल्कि उनको ही परेशान करता रहा।

निष्कर्ष

अगस्त 1688 ई. से 1696 ई. में छत्रसाल के धामुनी के किले पर अनेक बार आक्रमण किया लेकिन मुगल सेना की काफी क्षति के साथ उसे पीछे हटा दिया गया और मुगल सेना महोबा की ओर लौट गई। लेकिन छत्रसाल का धामुनी से अपना प्रभुत्व नहीं हटा अतः मुगल सम्राट ने सैफ शिकन खान को धामुनी के फौजदार के रूप में भेजा।[17] अभी भी छत्रसाल ने अपनी प्रभावपूर्ण शक्तिशाली कार्यवाहियों को जारी रखा। इस समय शेर अफगन से छत्रसाल का निरन्तर संघर्ष होता रहा। उसने 24 अप्रैल 1700 ई0 में पुनः छत्रसाल बुन्देला पर जूना और वारना (पन्ना) के पास आक्रमण किया। जिसमें 700 बुन्देलों और कुछ मुगल अधिकारियों की मृत्यु हो गयी। इसमें बुन्देला थोड़े भयभीत हुये और छत्रसाल को थोड़ी चोट भी आयी लेकिन, इस मुठभेड़ का परिणाम यह हुआ कि अप्रत्यक्ष रूप से विजय छत्रसाल की ही हुई।[18]छत्रसाल ने अक्टूबर सन् 1703 को नीमा सिन्धिया को मालवा पर आक्रमण करने हेतु आमन्त्रित किया लेकिन इसी समय फिरोज जंग ने मराठों को सिरौज के पास हरा दिया और इसलिये मालवा का अभियान जारी करते समय मराठों से छत्रसाल के गठबन्धन की योजना सफल नहीं हुई। इस समय फिरोज जंग ने छत्रसाल के विरूद्ध भी अभियान जारी करना चाहा लेकिन धामुनी के जंगलों में मराठों के विरूद्ध क्षति होने तथा कुछ बारिश का मौसम होने के कारण, यह अभियान टाल दिया गया।[19] औरंगजेब के शासन के अन्तिम समय में (नवम्बर–दिसम्बर सन् 1706 ई0) छत्रसाल ने फिरोजगंग से इस तथ्य हेतु प्रार्थना की, कि वह मध्यस्ता करके उसे साम्राज्य की सेवा में सम्राट द्वारा स्थान दिलाये। फिरोज जंग ने छत्रसाल के किलों पर आक्रमण किया जिसमें वहाँ का फौजदार इख्लास खान मारा गया और गढ़कोटा बुन्देलों के हाथ से निकल गया। नये फौजदार शमसेर खान के सितम्बर 1682 ई. में आने तक छत्रसाल ने धामुनी के क्षेत्रों में मुगलों के विरूद्ध कई बार अतिक्रमण किया।[20] फरवरी 1683 ई. से अप्रैल 1699 ई. तक केवल कुछ बिखरे हुये सन्दर्भ ही छत्रसाल की कार्यवाहियों के विषय में प्राप्त होते है। इस समय सम्राट की सम्पूर्ण शक्ति दक्षिण की कार्यवाहियों में लगी हुई थी। अतः दुर्निवार्य बुन्देलों को अधीन करने हेतु कोई खास प्रयास नहीं किये गये। इस मध्यवर्ती समय में छत्रसाल और उसके भाइयों ने पड़ौसी राज्यों का खूब दौरा किया। उनका अभियान उन मुगल अधिकारियों के विरूद्ध हुआ जो अनेक मुगल स्थानों पर नियुक्त थे। बुन्देलों ने पुनः धामुनी के आस–पास के क्षेत्रों पर कई बार हमला किया और उनके प्रहार भिलसा तथा उज्जैन तक के विस्तृत क्षेत्र में हुये। उन्होंने छोटे हिन्दू सरकारों व मुगल अधिकारियों से चौथ व अन्यकर वसूल किये। स्थानीय मुगल अधिकारी बुन्देलों के साथ समझौता वादी नीति ही अपनाकर उनको शान्त करते रहे।[21]अग्रिम कुछ वर्षों में छत्रसाल ने पड़ोसी क्षेत्रों के ऊपर अपनी पकड़ मजबूत की। उसने पुनः रथ, इरिज, हमीरपुर और धामुनी एवं अन्य क्षेत्रों पर उपद्रवी अभियान जारी किया। सन् 1686 ई. में कालिन्जर के किले को करमइलाही से लेकर छत्रसाल ने मान्धता चौबे को (किलेदार के रूप में) सौंप दिया। जुलाई सन् 1688 ई. में धामुनी का फौजदार दिलावर खां "चम्पतराय के पुत्रों" के विरूद्ध बढ़ा और उनको पराजित किया। तत्पश्चात् छत्रसाल ने चित्रकूअ, कालपी, इरिज एवं कोटरा नामक जगहों पर उपद्रव मचाना शुरू किया जिसे काफी प्रयत्नों के बावजूद मुगल शान्त नहीं कर पाये। लेकिन सम्राट औरंगजेब के अन्तिम समय में उसने स्वयं ही साम्राज्यिक सेवा में आने की इच्छा जाहिर की और उसे शीघ्र ही उचित पदवी एवं उपाधि प्रदान कर दी गई। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि केन्द्रीय शक्ति की दुर्बलता व मुगल सम्राट की व्यस्तताओं का लाभ उठाकर क्षेत्रीय शक्तियाँ अधिकाधिक विद्रोही हो जाया करती थी किन्तु सैनिक दबाव से त्रस्त होने पर जब ये क्षेत्रीय राजा मुगल सम्राट से क्षमा याचना करते थे तो वे अधिकांशतः उन्हें माफ कर सम्मानजनक मनसब व पदवी प्रदान कर दिया करते थे, जैसा कि छत्रसाल और उसके परिवार वालों के साथ औरंगजेब के व्यवहार से परिलक्षित होता है। बुन्देलों के चरित्र व उनके कार्यकलापों पर टिप्पणी करते हुये सर यदुनाथ सरकार लिखते हैं कि युद्ध करना ही इस जाति का मुख्य व्यवसाय व मनोरंजन था। इससे परेशान मुगल सेना ने छत्रसाल अपनी उपर्युक्त सफलताओं से और भी उत्साहित हुआ और उसने भिलसा के आस–पास के सम्पूर्ण क्षेत्रों को नियंत्रित करना चाहा। अब्दुल समद जो वहाँ का स्थानीय फौजदार था, उसने बुन्देलों का विरोध किया लेकिन असफल रहा और बुन्देलों ने सम्पूर्ण क्षेत्र को उपद्रवी क्षेत्र बना दिया।[22]इस प्रकार ऐसा प्रतीत होता है कि बुन्देलों ने एक समय में बुन्देला क्षेत्र में मुगल साम्राज्य को पूरी तरह से अस्तव्यवस्तता की स्थिति में ला दिया था। इस सबका श्रेय छत्रसाल की योग्यता को ही जाता है। जिससे अपने स्वभिमान को मुगलों के सामने झुकने नहीं दिया, यही छत्रसाल की राजनीति का प्रभाव रहा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ0 यदुनाथ सरकार, एशार्ट हिस्ट्री ऑफ औरंगजेब, भाग–3 पृ.सं. 30 गुप्ता, बी.डी. दि लाइफएण्ड टाइम्स ऑफ महाराजा छत्रसाल बुन्देला, पृ.स. 1
2. छत्रप्रकाश, पृ.सं. 56, पृ.सं. 56, पन्न रिकार्डस–पृ.सं. 75, गुप्ता बी.डी. दि लाइफ एण्ड टाइम्स ऑफ महाराजा छत्रसाल बुन्देला, पृ.सं. 18–19
3. छत्रसाल, पृ.सं. 60
4. छत्रसाल, पृ.सं. 69–70
5. डॉ. यदुनाथ सरकार का जयपुर अखबारात का संग्रह भाग –2, पृ.सं. 23
6. छत्रप्रकाश, पृ.सं. 77–79, भीमसेन 1, पृ.सं. 132
7. छत्रप्रकाश, पृ.सं. 81, मुगलदरबार भाग–2, पृ.सं. 318, भीमसेन नुस्खा–ए–दिलकुशा, पृ.सं. 24–25
8. छत्रप्रकाश, पृ.सं. 82–86, मुगलदरबार भाग–2, पृ.सं. 293, भीमसेन नुस्खा–ए–दिलकुशा, पृ.सं. 46, गुप्ता बी.डी. दिलाइफ एण्ड टाइम्स ऑफ महाराज छत्रसाल बुन्देला, पृ.सं. 24–25
9. छत्रप्रकाश, पृ.सं. 87–89, मुगलदरबार भाग–2, पृ.सं. 293–294
10. छतरपुर से 59 मील दक्षिण की ओर बिजोरी था। छत्रप्रकाश, पृ.सं. 87–89
11. सिरोज से 20 मील उत्तरपूर्व में आदैरा स्थित हैं।
12. छत्रप्रकाश, पृ.सं. 89–94, पन्ना रिकार्डस–पृ.सं. 61, उद्धृत गुप्ता बी.डी. दिलाइफ एण्ड टाइम्स ऑफ महाराजा छत्रसाल बुन्देला, पृ. सं. 25–26
13. डॉ. सरकार यदुनाथ, हिस्ट्री ऑफ औरंगजेब भाग–1,2, पृ.सं. 9
14. भीमसेन–नुस्खा ए–दिलकुश, पृ.सं. 255
15. अखबरात–1, जनवरी 1707 भाग–505, पृ.सं. 133–34, ई. उद्धृत गुप्ता बी.डी.–दि लाइफ एण्ड टाइम्स ऑफ महाराजा छत्रसाल बुन्देला, पृ.सं. 50–51
16. मुगल दरबार–भाग–2, पृ.सं. 212
17. पन्ना रिकार्डस–72, साकी मुस्तैद खान मासिर–ए–आलमगीरी, पृ.सं. 230, उद्धृत– गुप्ता बी. डी.–दि लाइफ एण्ड टाइम्स ऑफ महाराजा छत्रसाल बुन्देला, पृ.सं. 48–49
18. अखबरात–12 और 21 मई 1700 ई. डॉ. सरकार यदुनाथ हिस्ट्री ऑफ औरंगजेब भाग–5, पृ.सं. 383–85
19. अखबरात–1 सितम्बर–1682 ई. उद्धृत–गुप्ता बी.डी. – दि लाइफ एण्ड टाइम्स ऑफ महाराजा छत्रसाल बुन्देला साकी मुस्तैद खान मासिर–ए–आलमगीरी, पृ. सं. 127
20. गोरेलाल तिवारी–बुन्देलों का इतिहास– पृ.सं. 193, उद्धृत– गुपता बी.डी.– दि लाइफ एण्ड टाइम्स ऑफ महाराजा छत्रसाल बुन्देला पृ.सं. 47–49
21. छत्रप्रकाश– पृ.सं. 128–29, गुप्ता बी.डी.–दि लाइफ एण्ड टाइम्स ऑफ महाराजा छत्रसाल बुन्देला पृ.सं. 130–137
22. पन्ना रिकार्ड्स 76, उद्धृत– गुप्ता बी.डी. दि लाइफ एण्ड टाइम्स ऑफ महाराजा छत्रसाल बुन्देल पृ.सं. 40–41, छत्रप्रकाश, पृ.सं. 130–37